International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 03(I), July - September, 2022, pp. 36-38

प्राचीन चिकित्सा तकनीक

डॉ. प्रगति सिंघल*

प्रस्तावना

आज हमारा देश भारत तकनीकी क्षेत्र में भले ही अन्य विकसित देशों की अपेक्षा पिछड़ा हुआ हो, किन्तु एक समय ऐसा भी था जब कई प्रकार की उच्च तकनीकों का प्रयोग अनेक क्षेत्रों में भारत में होता था। भारत ज्ञान में सभी देशों का गुरु था तथा भारत से ही ज्ञान–विज्ञान का प्रसार–प्रचार अन्य देशों में हुआ। भारत को यह समस्त ज्ञान वेदों और उन पर आधारित ऋषियों के ग्रन्थों जैसे–उपवेदों आदि से प्राप्त हुआ। ऋषियों के पश्चात् अनेकों भारतीय विद्वानों, रासायनिक शास्त्रियों और कारीगरों ने भारतीय तकनीकी विज्ञान में अपना योगदान दिया।

प्राचीन चिकित्सा पद्धति मूलरूप से आयुर्वेद पर आधारित थी। आयुर्वेद विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति ही नहीं, अपितु यह अथर्ववेद का उपवेद है। काश्यप संहिता एवं ब्रहमवैतर्त पुराण में इसे 'पञ्चमवेद' कहा गया है। वेद केवल परलोक हितकर है, जबकि आयुर्वेद दोनों लोकों के लिए हितकर है। इसीलिए आयुर्वेद की पुण्यतम् वेद कहा गया है। यह आयु का वेद है, जो सार्वभौमिक, सार्वकालिक तथा प्राणिमात्र के लिए है।

आयुर्वेद शास्त्र उसे कहते हैं जिसमें हित, अहित, सुख और दुख आयु के लिए हित और अहित उस आयु का मान तथा आयु का स्वरूप बताया गया है। वेदों में आयुर्वेद के उद्देश्यों में नीरोगता', बल और शक्ति' दीर्घायुष्य' रोग के कारणों का उन्मूलन व आत्मा और शरीर की पुष्टता का उल्लेख मिलता है।

आयुर्वेद में वात, पित्त व कफ शरीर को धारण करने के धातु हैं। क्योंकि इनकी साम्यावस्था से ही शरीर स्वस्थ और निरोग रहता है। किन्तु जब ये अपने परिमाण से न्यून या अधिक हो जाते हैं और शरीर को दूषित कर रोग उत्पन्न करने लगते हैं तब इनकी संज्ञा त्रिदोष की हो जाती है। यह सिद्धान्त ऋग्वेद में सांकेतिक है। अथर्ववेद में विस्तृत विवरण है।

शल्य चिकित्सा वेदों और ब्राह्मण ग्रन्थों में शल्य चिकित्सा से सम्बद्ध महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त होते हैं। शल्य चिकित्सा से सम्बद्ध जितने मंत्र हैं वे प्रायः अश्विनी और इन्द्र से सम्बद्ध हैं। अश्विनी देवताओं के वैद्य हैं और वे कायचिकित्सा और शल्य चिकित्सा में प्रवीण हैं। शास्त्रीय सिद्धान्त है कि 'अग्नि शोमीय जगत' यह सारा संसार अग्नि तत्व और सोम तत्व से बना है। इन दोनों का समीकरण ही जीवन तत्व है। दोनों में से ऐ तत्व की आपेक्षिक न्यूनता या वृद्धि से सारे रोग होते हैं। अतः अग्नि़सोम को अश्विनी का रूप माना जा सकता है। शरीर में प्राण और अपान अग्नि–सोम के प्रतिनिधि हैं। अतः शतपथ ब्राह्मण ने दोनों नाक को अश्विनी कहा है। अग्नि–सोम सर्वत्र व्याप्त है, अतः इन्हें अश्विनी कहा है। इनका सामंजस्य ही सभी रोगों का निवारण है।

जैमिनीय ब्राह्मण में मधु विद्या और प्रवर्ग्य विद्या का उल्लेख मिलता है। यह विद्या इन्द्र से दधीचि को और उससे अश्विनी कुमारों को प्राप्त हुई थी। मधु विद्या के अन्तर्गत पुरूष में नव शक्ति संचार और क्षत–विक्षत अंगों को जोड़ना, किसी दूसरे के सिर व धड़ को जोड़ने की विद्या आती थी। जिसे वर्तमान में अंग प्रत्यारोपण तकनीक के रूप में जाना जाता है। प्रवर्ग्य या अधिकक्ष्य विद्या में दूसरे जीव–जन्तु का अंग मनुष्य में जोड़ देने

* ICSSR (P.D.F.) Fellow, जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

की शिक्षा है। ''अश्विनों ने अथर्व के पुत्र दध्य को घोड़े का सिर जोड़ा, तब उन्होंने अश्विनी को मधु विद्या सिखायी''। राजा खेल की पत्नी विश्पला की टांग युद्ध में कट गयी थी। अश्विनों ने धातु लौह की हल्की टांग उसके स्थान पर लगायी थी।

मूढगर्भ चिकित्सा के अन्तर्गत गर्भाशय को चीरकर गर्भ को बाहर निकालने व रूके हुए मूत्र को मूत्राशय से बाहर निकालने का उल्लेख अथर्ववेद में हैं। अश्मरी (पथरी) रोगों में मूत्राशय की पार्श्ववती गवीनी में या वृक्कों में मूत्र रूक जाता है। शल्य क्रिया द्वारा बाहर निकालने का उल्लेख अथर्ववेद में हैं।

यजुर्वेद में रूद्र को महान चिकित्सक बताया गया है। यह केवल मनुष्यों के ही रोगों को दूर नहीं करते अपितु गाय, घोड़े, भेड़ व बकरी आदि के रोगों को नष्ट करता है।

प्राकृतिक चिकित्सा

वेदों में सूर्य किरणों से चिकित्सा का विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है। सूर्य को इस चराचर जगत की आत्मा कहा गया है। उपनिषद् में सूर्य को मानव जगत् का प्राण कहा है। वेदों में उदय होते हुए सूर्य की किरणों का व्यापक महत्व बताया गया है। जिसमें हृदय के सभी रोगों पीलिया और रक्ताल्पता को दूर करता है। वायु चिकित्सा में वायु को ऋग्वेद और अथर्ववेद में भेषज, विश्व भेषण व अमृत कहा गया है। यही प्राण तत्व है जो शरीर को ज्योति, तेज, ऊर्जा और ऊष्मा प्रदान करता है। प्राणायाम शरीर के अन्दर के सभी दोषों को जलाकर शरीर को शुद्ध करता है। अतः शरीर स्वस्थ व निरोग रहता है।

अग्नि चिकित्सा में अग्नि के गुणों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि 33 देवों की जो कुछ विशेषताएँ हैं वे सभी विशेषताएँ अग्नि में हैं। इसका अभिप्राय है कि ऊर्जा के समस्त स्रोत अग्नि में हैं। अग्नि शीत की औषधि है। अग्नि रोग के कीटाणुओं का नाशक है। जल चिकित्सा में रूद्र और वरूण को अग्रगण्य बताया गया है। रूद्र को जल चिकित्सक के साथ प्रथम दिव्यभिषक तो वहीं वरूण को वैद्यों का स्वामी कहा गया है। ऋग्वेद में वर्णन हैं जल में सभी औषधियों के गुण विद्यमान हैं। जल से सभी रोगों की चिकित्सा हो सकती है। प्राकृतिक चिकित्सा में मृदा को चिकित्सा की दृष्टि से रोग नाशक बताया गया है।

ऋग्वेद में एक पूरा सूक्त श्औषधिश सूक्त है। इसमें 23 मंत्रों में औषधियों का महत्व प्रतिपादित किया गया है। यजुर्वेद में भी यही भाव 27 मंत्रों में दिया गया है। अथर्ववेद औषधियों के लिए आकर ग्रन्थ हैं। इसमें सैकड़ों सूक्त औषधियों और आयुर्वेद से सम्बद्ध हैं। इनमें अनेक औषधियों के गुण–धर्मों का विस्तृत विवेचन है। यथा– तुलसी, आँवला, गिलोय, अश्वगन्धा, जावित्री, पीपल, नीम, मुलैठी, ग्वारपाठा (एलोवेरा). अर्जुन की छाल, हरड़, गुग्गल, दालचीनी आदि।

इस प्रकार निःसंकोच भाव से कहा जा सकता है कि प्राचीन चिकित्सा आधुनिक चिकित्सा विज्ञान से कहीं अधिक विकसित अवस्था में थी। इस प्रकार प्राचीन युग को चिकित्सा विज्ञान का स्वर्णगुण यदि कहा जाये तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. विद्मा शरस्य पितर ...अस्तु बालिति ।। (1/3/1–5 अथर्ववेद)
2. विश्वान् देवाँ आ वह सोमपीतये ऽन्तरिक्षादुषस्त्वम् सास्मासु धा गोमदश्वावदुवभ्यमुषो वाजं सुवीर्यम।। (1/48/12 ऋग्वेद)
3. 19/67/1–8 अथर्ववेद
4. यदामयति निष्कृत। (तैत्तिरीय संहिता 4/2/6/2)
5. उर्वोरोजो जङ्घयोर्जवः सर्वात्मानिभृष्ट ।। (19/60/2 अथर्ववेद)
6. द्विवेदी रमानाथ व रविदत्त त्रिपाठी, पूर्वोक्त, पृष्ठ–10
7. उत त्या दैव्या भिषजा शं नः करतो अश्विना । ययुयातामितो रपो अप सिधः (8/18/8 ऋग्वेद)

8. प्राण एवेन्द्र जिह्वा सरस्वती नासिके ऽश्विनौ यद्वै प्राणेनान्नमात्मन्नप्रणयते यजत्तयेतान्नयेवैतत्तसार्द्धऽत्वात्मन्धन्ते ।। (12/9/1/14 ऋग्वेद)

9. द्विवेदी रमानाथ व रविदत्त, आयुर्वेद का इतिहास पृष्ठ 35

10. वही पृष्ठ–207

11. आथर्वणायाश्विना दधीचे .....दस्रावपिकक्ष्यं वाम ।। (1/117/22 ऋग्वेद)

12. वि ते भिनदिभ मेहन वि मोनिं वि गवीनिके । वि मातरं चं पुत्रं च वि कुमारं जरायुणाम जरायु पद्यताम्।। (1/11/5 अथर्ववेद)

13. यदान्त्रेषु गवीन्योर्यद. सर्वकम् ।। (1/3/6–7 अथर्ववेद)

14. भेषजमासि भेषजं गवेश्वाय पुरुषाय भेज । सुखं मेषाय मेठयं ।। (3/59 यजुर्वेद)

15. सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां मर्यो न योषामभ्येति पश्चात्। यत्रा नरो देवयन्तो युगानि वितन्वते प्रति भद्राय भदय्।। (1/115/2 ऋग्वेद)

16. विश्वरूपं हरिणं जातवेदसं परायणं ज्योतिरेकं तपत्तम्। सहस्रराभियः शतधा वर्तमान् प्राणः प्रजानामुदयत्येषः सूर्यः।। (1/8/प्रश्नोपनिषद)

17. अग्निर्भा गोप्ता परि.....यतन्ताम् । (17/1/30 अथर्ववेद)

18. उद्वयं तमसस्परि.....ज्योतिरुत्तमम् (1/50/11 ऋग्वेद)

19. इदं वर्चो अग्निना..... ददातु में।। (19/37/1 अथर्ववेद)

20. या औषधीः पूर्वा.....अभिदासति ।। (10/97/1–25 ऋग्वेद)

21. या औषधी पूर्वा जाता.....अभिदासति । । (12/75–101 यजुर्वेद)

❖◆❖